और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।*

भारतीय विद्या मनीषी
पंडित महेश दत्त शर्मा 'गुरुजी'

हर ते भे हनुमान :- गोस्वामी तुलसीदास जी रचित दोहावली के दोहा १४२ से उद्धृत है यह पंक्ति। आशुतोश मुंद मंगलालय कपाली अपने निजस्वरूप का त्याग कर वानराकारविग्रह पुरारी अपने इष्ट देव श्री राम की सेवार्थ प्रकट होते है। अतएव इनका प्राकटय दिवस सर्वमंगलप्रद है। क्योंकि मंगल भवन अमंगलहारी प्रभु राम के सेवक बनकर आप मंगल मूरति मारुतनन्दन बन कर - "महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नो अञ्जनीसुतः (आनन्दरामायण) प्रामाणिक श्लोकाधार से अद्यावधि हनुमान प्राकट्य दिवस हनुमान जयन्ती के रूप में सर्वत्र मनाया जाता है। कहीं कहीं कल्प भेद से श्री राम परमप्रिय श्री हनुमानजी "ऊर्जे कृष्ण चतुर्दश्यां भौमे स्वात्मा कपीश्वरः। मेषलग्ने ऽञ्जनीगर्भात् प्रादुर्भूत शिवः स्वयम्।।" अत :- "कल्प भेदेन वदन्ति बुधा इत्यादि केचन ।। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी - भौमवार को प्रकटना लिखा है।

परम कृपालु शिव ने वानराकार ही क्यों चुना। सोचा वानराकार बन कर जाऊंगा वो मेरे प्रभु न जाने कौनसे पद पर मुझे प्रतिष्ठित करेंगें। क्योंकि वे भी नररूप में गौ द्विज धेनु देव हितकारी। कृपासिन्धु मानुषतनधारी। गौ ब्राह्मण पृथ्वी देव हितार्थ प्रकट हुए, अत: नर रूप में सेवा में बाधा आ सकती है। वे नर हैं मैं वानर रहूंगा तो सेवा के आदेश में प्रभु कमी भी संकोच नहीं करेंगे। और मेरा लक्ष्य पूर्ण होगा - अतः हर (शिव) से हनुमान बनकर, महादेव वानर आकार में महावीर बनकर प्रकट हुए, क्योंकि जिस शरीर से श्री रामजी के प्रीति का निर्वाह हो जाये चतुर लोग उसी शरीर का आदर करते है। अत: गोस्वामी के शिव वानराकार बने "जेहि शरीर राते रामसों, सोई आदरही सुजान।

रुद्र देह तजि नेह बस वानर में हनुमान "दोहावली"॥2॥ अतः गोस्वामी जी ने लघु कलेवर ग्रन्थरत्न श्रीहनुमान चालीसा में शंकर सुअन (स्वयं) केसरीनन्दन तेज प्रताप महा जगवन्दन" श्री हनुमानजी का परिचय देते है। महादेव शिव ने मां अञ्जनी के गर्भ को ही क्यों चुना – वा. 0॥4॥66 "जामवन्तजी ने हनुमानजी से उनके जन्म वृतान्त को कहा था कि- पुञ्जिकस्थला नाम से विख्यात अप्सरा एक ऋषि के उपहास के कारण शापवश कुञ्जर वानर की कन्या अञ्जना नाम की वानरी के रूप में जन्मी। अञ्जना का विवाह वानरराज केसरी से हुआ | पर अञ्जना की विशेषता यह थी कि वह

**श्री हनुमत जन्म महोत्सव विशेष*

ऋषि राज अनुग्रह से इच्छानुसार रूप धारण कर सकती थी। एक बार वह मानवी रूप धारण कर अत्यन्त सुन्दरी बन कर एक वेङ्कटाचल पर्वत पर विचरण कर रही थी - पवन देव ने उसके रूप पर मोहित होकर मन से उसका आलिंगन किया। अञ्जना घबरा गयी। वह बोली "एक पत्नीव्रतमिदं को नाशयतुमिच्छति" अरे कौन है तू जो मेरे पतिव्रत का नाश करना चाहता है। तब पवन देव ने कहा- क्रोधित न होवें। पवन अव्यश्रय रूप से तुम्हारा आलिंगन कर मानसिक संकल्प द्वारा अपने समान बल एवं पराक्रम से युक्त परम बुद्धिमान पुत्र प्रदान करूंगा। पुत्राभिलाषिणी अञ्जना प्रसन्न हो गयी और पवन के औरस पुत्र एवं केसरी वानर के क्षेत्रज पुत्र के रूप में परमकृपालु शिव चित्रानक्षत्रयुत चैत्र पूर्णिमा को मेष राशि उच्चगत सूर्य के रहते प्रकट हुए - मेष लग्न प्रारम्भ में आप बल बुद्धि निधान स्वर्णशैल संकास कोटि कोटि सूर्य के समान तेजोमय होकर प्रकट हुए। चैत्रपूर्णिमा को शनि होने से आपका शनिवार को अधिक पूजन का महत्व है तथा कल्पभेद से कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मंगल होने से आपका मंगलवार प्रसिद्ध है। आपका प्राकट्य होते ही बल पराक्रम शौर्य का परिचय हनुमानाष्टक में "बाल समय रवि भक्ष लियो तब तीनहु लोक भयो अधियारो" जगत विदित है। इस पराक्रम की चर्चा का उल्लेख गोस्वामीजी ने - श्री हनुमान बाहुक ग्रन्थ में भी किया है "भानुसों पढ़न हनुमान गये भानुमान, अनुमान शिशुकेलि कियो फेरफार सो" अत: बाल्यावस्था में प्रकट होते ही अपने अतुलित बल का परिचय मां अञ्जना एवं पिता केसरी व सुरराज इन्द्र को दिया तथा स्वयं को जगत विदित करा दिया, क्योंकि गोस्वामी जी ब्रह्मावतार जामवन्त जी के श्रीमुख से हनुमानजी स्वयं को उनके बल, बुद्धि विवेक विज्ञानविधान के गुण से किंष्किन्धाकाण्ड के उपसंहार में करा रहे हैं।

"पवनतनय बल पवन समाना | बुधि विवेक विज्ञानविधाना।।"

इस पंक्ति के साथ उनके आकर का हेतु भी स्पष्ट किया है। आपका जन्म पुनीत भारत की पवित्र भूमि पर आने का कारण - हे पवनतनय - आपका अवतार कारण :- "राम काज लागि तव अवतारा" अर्थात् श्री राम के कार्य के लिये ही आपका अवतार हुआ है, जन्म नहीं। ईश्वर अवतरित होते हैं और महापुरुष का जन्म होता है, अतः श्री ऋक्षपति जामवन्त जी ने अवतार शब्द ही अपनी वाणी से उच्चारित किया है। राम कार्य हेतु अवतार सुनते ही अञ्जनीनन्दन पर ऐसा प्रभाव हुआ, कि वे लघुकाय से विशालकाय बन गये। "सुनतहिं भयउँ पर्वताकारा"। अतः आप का प्राकट्य श्रीराम कार्य हेतु हुआ, अत: श्री हनुमानचालीसा में विनय कर तुलसी आपका यशोगान कर रहे है।

"रामकाज करिबे को आतुर" सिन्धु तट पर जितने भी बन्दरभालु हैं, वे रामकार्य के लिए आतुर तो हैं पर किसी में रामकाज के लिए केवल बल है, तो किसी में केवल बुद्धि है। पर श्रीरामारागी श्री हनुमान जी में सभी गुण हैं, "विद्यावान गुणी अति चातुर" तब गोस्वामी जी ने कहा आप रामकार्य के सम्पादन मे दक्ष एवं पूर्ण चतुर हो, रामकार्य

करने मे शीघ्रता ही नहीं, जब तक आप प्रभु श्रीराम का कार्य नहीं कर लेते तब तक विश्राम भी नहीं करते। सुन्दरकाण्ड श्री मानस जी में आपके शब्दों में उद्धृत है, आप लंकागमन के समय राम काज हेतु इतने आतुर हो गये, सिन्धु का उल्लंघन कर रहे थे तब मैनाकपर्वत को समुद्र ने निर्देश दिया था कि हे पर्वत मैनाक श्री हनुमान जी को आप अपने उपर विश्राम दीजिएगा। यह सुन कर आपने अपने पिता के मित्र मैनाक का स्पर्श कर मानो प्रणति निवेदन कर कह दिया-

"हनुमान तेहि परसा ककन करपुनि कीन्ह प्रनाम, रामकाज करिबै बिनु, मोहि कहाँ विश्राम" ऐसे हनुमान जो रामकाज हेतु आतुर हैं। प्रभु चरित्र गुणग्राम में तथा श्रवण में भी आपकी इतनी निष्ठा है कि रामकार्य को छोड़ कर प्रभुचरित्र श्रवण में तल्लीन हो जाते हैं- अत: आपका यह वैशिष्टय भी श्री हनुमान चालीसा में प्रकट है - "प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया" इस चरित्र रसश्रवण का प्रमाण "लक्ष्मण प्राणदाता बन कर संजीवनी लेने अति वेग से जा रहे थे पर कालनेमि कपटी के रामकथागायन पर मुग्ध हो वहाँ आप बैठ जाते हैं - यह आपका रामकथा पर अतिशय श्रद्धा का प्रमाण है। इसी गुण के कारण आप राम के ही मन में नहीं उनकी अतिशय प्रिय पराम्बा जानकी एवं उनके लाडले प्रिय लक्ष्मण के भी हृदय में बसे रहते हैं। "प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। रामलखन सीता मन बसिया" आप श्री रामगुणग्राम के श्रवण रसिया ही नहीं अपितु स्वयं रामगुणगान भी सहज सरल भाव से करते हैं और श्रोता के दु:ख का हरण करते हैं। सुन्दरकाण्ड अशोकवाटिका में सशोक जानकी को छिप कर देखते हैं, तब आप 'रामचन्द्र गुण बरन लागा। सुनतहि सीता कर दु:ख भागा' विरह जलधि में डूबती हुई जानकी जी के रक्षक बन कर हनुमानजी ने बालस्वरूप जानकी माँ को दिखाया- "सूक्ष्मरूप धरि सियहिं दिखावा" और माँ का आशीर्वाद लेकर अपना विकटरूप का अनुभव भी मां जानकी एवं निशाचरी को दिखाया "विकट रूप धरि लंक जरावा" क्योंकि माँ जानकी जी का एक आशीर्वाद नहीं आपको छ: आशीर्वाद मिले।

आशीष दीन्हि रामप्रिय जाना, होऊ तात (1) बल (2) बुद्धि निधाना (3) अमर (4) अजर (5) गुणनिधि होऊ। करहु बहुत रघुनायक छोहू।" ये छ: आशीर्वाद पाकर आप माँ के पुत्र बन गये। श्रीराम के दुलारे बन गये "असुर निकन्दन रामदुलारे "जब आप माँ के मानसिक पुत्र बन गये तो आप के जन्मदिवस के उपलक्ष में माँ ने छ आशीर्वाद देकर आपको दाता भी बना दिया- "अष्टसिद्धिनवनिधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता।।" अत: आपको अष्टसंख्या बहुत प्रिय हो गई। तुलसीदासजी ने आपकी अष्ट विशेषता सुन्दरकाण्ड के प्रारम्भ श्लोक में प्रकट की हैं:- (1)अतुलितबलधामं (2) हेमशैलाभदेहं (3) दनुजवनकृशानुं (4) ज्ञानिनामग्रगण्यम् (5) सकलगुणनिधानं (6) वानराणामधीशं (7) रघुपतिप्रियभक्तं (8) वातजातम् नमामि, ऐसे अञ्जनीनन्दन भगवान श्रीहनुमान के प्राकट्य दिवस की यह चैत्र पूर्णिमा हमारा सर्वाधिक मंगल करे। शुभम्

हनुमान् स्तुति

हनुमान् अतुलित बल के आकर हैं उनके जैसा बलशाली अन्य कोई भी दृष्टिगोचर नहीं होता। सुवर्ण के पर्वत के समान आभासम्पन्न देह से वे देदीप्यमान हैं। 'पर्वत के समान' कहने से हनुमान् के शरीर की विशालता व्यंजित होती है। असुरों रूपी वन के लिए वे अग्नि हैं। ज्ञानियों में वे अग्रगण्य हैं। उनमें केवल शारीरिक बल की ही अधिकता नहीं हैं, अपितु बुद्धिबल का भी प्राचुर्य हनुमान को अद्वितीय बनाता है। सम्पूर्ण गुणों के निधान तथा वानरों के स्वामी होने पर भी के रघुपति के प्रियभक्त हैं - ऐसे वायुपुत्र हनुमान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।

सामान्यतः यह देखा जाता है कि गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति में अथवा बौद्धिक ज्ञानवान् व्यक्ति में अभिमान का भाव हो जाता है, परन्तु हनुमान् में गुणों का आधिक्य होने पर, बल एवं पराक्रम का उत्कर्ष होने पर भी रघुनाथभक्ति की पराकाष्ठा पायी जाती हैं। उनमें अभिमान का लेश भी दृष्टिगोचर नहीं होता। यह वस्तुतः लोक के लिए अनुकरणीय है।